30

''तुम सब पर अनुग्रह हो''

(13:10-12, 15-25)

हम इब्रानियों की पुस्तक के अन्त में आ गए हैं। अन्तिम आयतों में हमें संघर्ष कर रहे मसीही लोगों के लिए कई अतिरिक्त ताड़नाएं मिलती हैं। हमें लेखक की ओर से कुछ व्यक्तिगत विनतियां देखने को भी मिलती हैं।

एक प्रचारक की ओर से ताड़ना (13:10-12, 15-17)

परमेश्वर की आराधना करो और दूसरों की सेवा करो (13:10-12, 15, 16)

आयत 10 से पत्री में बलिदानों की भाषा का इस्तेमाल हुआ है। एक उद्देश्य मसीहियत के यहूदी आलोचकों को जवाब देना हो सकता है। यदि वे कहते, ''मसीहियत में कोई वेदी नहीं है,'' तो मसीही जवाब हो सकता था, ''हमारी एक वेदी है'' (आयत 10) जो आत्मिक वेदी है ''क्रूस''। यदि वे कहते, ''मसीहियत में प्रायश्चित का कोई बलिदान नहीं है,'' तो वह ध्यान दिला सकता था कि मसीह को नगर (यरूशलेम) के बाहर वैसे ही बलिदान किया गया था जैसे प्रायश्चित के दिन पशुओं के शरीरों के बलिदान किए जाने के लिए उन्हें छावनी से बाहर ले जाया जाता था (आयतें 11, 12; देखें लैव्यव्यवस्था 16:27)।

कोई यहूदी कह सकता था, ''मसीहियत में कोई याजकाई नहीं है जो बलिदान भेंट कर सके।'' इब्रानियों की पूरी पुस्तक में यीशु को हमारे बड़े महायाजक के रूप में बताया गया है जिसने अन्तिम बलिदान के रूप में अपने आपको चढ़ा दिया। एक अर्थ में आयतें 15 और 16 कहती हैं, ''हर मसीही याजक है [देखें 1 पतरस 2:9] जो प्रभु को बलिदान चढ़ा सकता है।'' पशुओं के बलिदान नहीं (इब्रानियों 10:5)। इसके विपरीत वे *आत्मिक* बलिदान हैं। मसीही लोग क्या बलिदान चढ़ायें?

- ''स्तुति का बलिदान'' जो ''होंठों का फल जो उसके नाम को धन्यवाद देते हैं'' (13:15)।
- दूसरों के साथ ''भलाई करने और उदारता दिखाने'' का बलिदान (आयत 16)। (ध्यान दें कि परमेश्वर के लिए प्रेम और दूसरों के लिए प्रेम आपस में जुड़ा हुआ है [देखें 1 यूहन्ना 4:20]।)
- इसके अलावा ''ऐसे बलिदान'' (आयत 16) जिसमें हम अपने समस्त जीवन प्रभु को देते हैं (देखें रोमियों 12:1, 2)।

अब परमेश्वर पशुओं के बलिदानों से प्रसन्न नहीं होता (देखें 10:6)। परन्तु आत्मिक

बलिदानों से वह ''प्रसन्न होता है'' (13:16)।

अपने अगुओं की आज्ञा मानों और उनके अधीन रहो (13:17)

इब्रानी मसीही लोगों के पिछले अगुओं का उल्लेख 13:7 में किया गया है। अब हम वर्तमान अगुओं पर ध्यान को देखते हैं। आयत 17 में ''अगुओं'' शब्द मुख्यतया मण्डली के प्राचीनों के लिए है। बेशक यदि हमारे अगुवे हमें वचन से बाहर की किसी बात को बताते हैं तो हमें उनकी नहीं माननी चाहिए (प्रेरितों 5:29)। परन्तु हमें न्याय और विचार के मामलों में अदीन मन रखना चाहिए।[1] आयत 17 में संकेत हो सकता है कि पाठकों की आत्मिक समस्या के रूप में वे मण्डली से इस हद तक निकल आए थे कि वे अपने अगुओं की अगुआई को नहीं मान रहे थे।

ऐल्डरों के अधीन होना इतना महत्वपूर्ण क्यों है? इसका उत्तर आयत 17 के अन्तिम भाग में मिलता है: ''वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी सांस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं।'' एल्डर होने से बढ़कर कोई जिम्मेदार नहीं है!

एक मित्र की ओर से विनतियां (13:18, 19, 22, 24)

आयतें 18 से 25 पुस्तक का समापन करती हैं। इस भाग में कई विनतियां हैं। ये किसी प्रचारक या शिक्षक की ओर से ताड़ना जितनी नहीं है जितनी विनतियां हैं।

''हमारे लिए प्रार्थना करो'' (13:18, 19)

पौलुस आम तौर पर अपने मित्रों से उसके लिए प्रार्थना करने को कहता था (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:3; 2 थिस्सलुनीकियों 3:1); इस लेखक ने भी ऐसा ही किया (इब्रानियों 13:18)। उसने उन्हें और भी गम्भीरता से ऐसा करने को प्रोत्साहित किया (आयत 19)। इस पत्र को लिखने में उसके मन में अपने पाठकों की भलाई थी; इसलिए उसका विवेक शुद्ध था। (कोई शक नहीं कि वह उनके पास अन्त में लौट जाने पर और भी बहुत कुछ कहता [आयत 19]।)

''मेरी बात को मानो'' (13:22)

यह समझ रखते हुए कि कुछ इब्रानी मसीही लोगों को लिखी गई बातों को स्वीकार करने में कठिनाई आएगी, लेखक ने उन्हें उसके संदेश को मानने (''सह लेने'') और इस पर खुला मन रखने को कहा। किसी को लग सकता है कि उसने बहुत अधिक लिख दिया। परन्तु पत्र में चर्चा किए गए महत्वपूर्ण विषयों को ध्यान में रखते हुए उसने उनके साथ अपने व्यवहार को संक्षेप में रखना माना।

''एक-दूसरे को नमस्कार करो'' (13:24)

आयत 24 का पहला वाक्य मण्डली के केवल एक भाग के लिए कहा गया लगता है। जैसा कि पहले कहा गया है, यह प्रबल सम्भावना है कि कुछ यहूदी मसीही लोग आराधना सभाओं से अनुपस्थित रहकर (10:24, 25) और अपने अगुओं की सुनने से इनकार करके (13:17)। मण्डली से निकल गए। ये लोग पूरी तरह से गुमराह होने के छोर पर थे (देखें इब्रानियों 6:1-8; 10:23-31)। उन्हें अन्य मसीही लोगों के साथ अपनी संगति को बहाल करना आवश्यक

था (जो फिर से उनके साथ मिलकर आरम्भ हो सकती है)। कलीसिया में हमें एक-दूसरे के वफ़ादार रहना आवश्यक है (देखें 10:24)!

सारांश (13:20, 21, 23, 25)

पत्र के अन्त में एक व्यक्तिगत टिप्पणी जोड़ दी गई (आयत 23), परन्तु अन्तिम पंक्तियां मुख्यतया एक आशीष वचन (आयतें 20, 21) और एक लघु आशीष (आयत 25) थी। आशीष वचन नये नियम में सबसे सुन्दर बातों में से एक है। यीशु पर दिए गए बल पर ध्यान दें। इब्रानी मसीही लोगों को यीशु की ओर वापस आना और ''हर हाल में उसे थामे रखने'' की आवश्यकता थी।[2] यदि हम यीशु के वफ़ादार रहे, तो परमेश्वर ''[हमें] हर एक भली बात में सिद्ध'' करेगा-उस ''हर भली बात में'' नहीं जिसे हम चाहते हैं बल्कि ''उसकी इच्छा पूरी'' करने के लिए आवश्यक ''हर भली बात में'' (आयत 21)।

यह पत्री परमेश्वर के अनुग्रह के सब पाठकों के साथ होने की प्रार्थना के साथ समाप्त होती है। इस महान पुस्तक के अपने अध्ययन के अन्त में मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर का अनुग्रह *टुथ फॉर टुडे* के पाठकों के साथ ही होगा: ''तुम सब पर अनुग्रह होता रहे'' (आयत 25)!

सिखाने वाले के लिए नोट्स

लीडरशिप पर एक पुस्तक में मैंने अच्छा अनुयायी बनने पर एक छोटा पाठ दिया है।[3] इस अध्ययन में ऐल्डरों के प्रति सदस्यों की जिम्मेदारियों के प्रति चर्चा करने के लिए अध्ययन इब्रानियों 13 की आयतों से लिया गया:

1. आभार मानने वाले मन के दास उन्हें स्मरण रखो (आयत 7)।
2. अधीन मन के साथ उनका आदर करो (आयत 17)।
3. स्नेही मन के साथ उनके साथ जुड़े रहो (देखें आयत 24क)।

इस पाठ में इन तीन मुख्य आयतों पर अतिरिक्त टिप्पणियां हैं। इब्रानियों 13 पर पढ़ाते समय वे आपके लिए सहायक हो सकती है।

टिप्पणियां

[1]इब्रानियों की पुस्तक के लेखक को केवल उन पाठकों की चिन्ता थी जो मण्डली के अगुओं की नहीं मान रहे थे। कहीं ओर ऐल्डरों को उन लोगों पर जो उनके अधीन हैं ''हुकूमत करने से बचने को कहा गया है'' (देखें 1 पतरस 5:3)। समझदार ऐल्डर विचार के मामलों में सदस्यों की प्राथमिकताओं के प्रति संवेदनशील होंगे। उन्हें सदस्यों को अपनी प्राथमिकताएं बताने के लिए प्रोत्साहित भी करना चाहिए। [2]नील आर. लाइटफुट, 26 अक्टूबर 1985 को फोर्ट वर्थ, टैक्सस, इब्रानियों की पुस्तक पर एसीयू की एक्सटेंशन क्लास। [3]डेविड रोपर, ''डेवलपिंग लीडरशिप,'' *टुथ फॉर टुडे* (जुलाई 2007): 36-37 ''थ्री 'आर'स' ऑफ़ फॉलो-शिप।''